ज़मीन के प्रथम घुसपैठिए

डॉ. चन्द्रशीला गुप्ता

बरसात की पहली फुहार के साथ ही मेंढकों व टोड की टर्र-टर्र सुनाई देना आम बात है। मॉनसून का आगमन इन उभयचरों के जननकाल का घोष भी होता है और चारों ओर मेंढक व टोड कूदते-फांदते नज़र आने लगते हैं।

हममें से अधिकांश लोग मेंढक व इनके बन्धु टोड से तो परिचित होते हैं लेकिन इनके दूरस्थ रिश्तेदार सेलेमेण्डर के बारे में बहुत कम जानते हैं। सेलेमेण्डर छिपकलियों से ज़्यादा मिलती-जुलती है। अतः इन्हें उभयचर या मेंढक का रिश्तेदार मानना मुश्किल हो जाता है। वास्तव में ये सभी उभयचर यानी दोहरा जीवन जीने वाले जीव हैं। ये ज़मीन के साथ-साथ पानी में भी आराम से जीते हैं।

यह जानने के लिए कि ये प्राणी दोहरा जीवन क्यों जीने लगे, हमें पृथ्वी के 40 करोड़ वर्ष पूर्व के इतिहास में जाना पड़ेगा। उस वक्त धरती पर सूखा पड़ा था और वहां मौजूद अथाह पानी कम होने लगा था। ऐसे में मछलियों के लिए ज़रूरी हो गया कि वे सूखते तालाब या नदी को छोड़कर किसी अन्य पानी वाली जगह पर पहुंचें। यह थल यात्रा रात में ही होती होगी जब ताप कम होता है। साथ ही पानी से बाहर रहते हुए सांस लेने के लिए फेफड़ों का विकास हुआ होगा। फेफड़ों वाली यही मछलियां (लंग फिश) हम थलचरों की प्रथम पूर्वज हैं।

उभयचरों का विकास भी इन्हीं से हुआ माना जाता है। चूंकि प्रारम्भिक उभयचरों के जीवाश्म उपलब्ध नहीं हैं, अतः लंग फिश से थलचर कैसे विकसित हुए, इस प्रक्रिया को एकदम ठीक से बता पाना सम्भव नहीं है।

थलचरों के विकसित होते ही उन्होंने समूह बनाकर रहना शुरू कर दिया और वे सब प्रकार के माहौल में रहने लगे। इस प्रकार उभयचर ज़मीन के पहले सफल घुसपैठिए हुए। अण्टार्कटिका को छोड़कर ये उभयचर समस्त महाद्वीपों में पाए जाते हैं। तब से इनकी तकरीबन 4000 प्रजातियों में ही विकसित हो पाई हैं। इनकी पूरी आबादी में भी मेंढक और टोड ही ज़्यादा (लगभग 85 प्रतिशत) हैं और लगभग हर जगह नज़र आते हैं। रीढ़धारी प्राणियों में इनका समूह सबसे छोटा है।

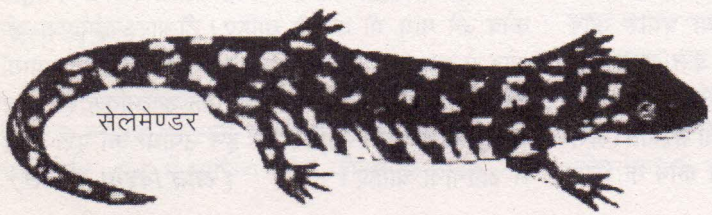

उभयचरों में मेंढक और टोड पर सबसे ज़्यादा शोध हुआ है। अन्य सीसेलिया समूह पर बहुत कम अध्ययन हुआ है। छुप कर रहने के कारण इन पर किसी का ध्यान सहज ही जाता नहीं है। आम तौर पर मेंढक व टोड छोटे होते